ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

स्थापना वर्ष –1919 ओ३म् शताब्दी वर्ष –2019

आर्य समाज महाराजपुर

जिला–छतरपुर (म.प्र.)

शताब्दी समारोह
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

शताब्दी समारोह
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

शताब्दी समारोह

दिनांक 2 नवम्बर, शनिवार से 4 नवम्बर, सोमवार 2019 तक
तदानुसार कार्तिक शुक्ल ६,७,८ विक्रमी संवत् २०७६

स्थान : महर्षि दयानंद शिक्षा महाविद्यालय, महाराजपुर

कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण

- स्मारिका का विमोचन
- विद्वान-कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान
- आगामी वर्षो के कार्यो की घोषणा
- योग एवं आर्यवीरों द्वारा प्रदर्शन
- वैदिक साहित्य के स्टॉल
- प्रांतीय आर्य महासम्मेलन
- शताब्दी समारोह एवं यज्ञ की पूर्णाहुति।

शताब्दी समारोह में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।
संगठन की एकता हेतु हजारों की संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

आयोजक

आर्यसमाज महाराजपुर

जिला–छतरपुर (म.प्र) 471501

Mob. 8435770208, 9425882552, 8120109248, 9755585458, 9826285402

Website : www.aryasamajmaharajpur.org

Email-id : aryasamajmah@gmail.com

ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म्

महर्षि दयानंद सरस्वती

आर्य समाज महाराजपुर

जिला–छतरपुर (म.प्र.)

शताब्दी समारोह

दिनांक 2 नवम्बर, शनिवार से 4 नवम्बर, सोमवार 2019 तक

तदानुसार कार्तिक शुक्ल ६,७,८ विक्रमी संवत् २०७६

शताब्दी समारोह

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज महाराजपुर का विवरण कल और आज

आर्यसमाज महाराजपुर का उद्भव और विकास– बुन्देलखण्ड केशरी महाराज छत्रसाल के कर कमलों द्वारा महाराजपुर नगर की स्थापना हुई थी। यह नगर बुन्देलखण्ड की हरी भरी पट्टिकाओं में अपने अनेकानेक लजाशयों और दूर दूर तक फैले पान के बागानों (बरेजों) से शोभित छतरपुर जिले में स्थित है।

आर्यसमाज की प्रारंभिक भूमिका– स्व. श्री लल्ला सुजान सिंह द्वारा मीति क्वांर सुदी 7 सम्वत् 1973 में पाठशाला की नींव रखी गई और भवन तैयार कर पाठशाला प्रारंभ की गई दो वर्ष वाद विश्वनाथ सिंह जू देव के कर कमलों द्वारा आर्यसमाज का शिलान्यास किया गया जो उक्त दिनांक से ही आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त लखनऊ में 200 रू0 की कोटि में प्रविष्ट हुई। उस समय पदाधिकारी निम्न प्रकार थे।

1. लल्ला सुजान सिंह प्रधान 2. श्री बाबूराम जी चौरसिया उपप्रधान 3 श्री नर्मदा प्रसाद जी खरे मंत्री 4. श्री नन्दराम चौरसिया कोषाध्यक्ष

स्वतंत्रता आंदोलन में आर्यसमाज की भूमिका – सन् 1931 से 1947 तक देश को स्वतंत्रता दिलाने हेतु इस रियासत में आंदोलन प्रारंभ किया गया उसमें सर्वाधिक आर्यसमाज के सभासदों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वप्रथम आंदोलन का जो कार्यालय बना उसमे श्री दीनदयाल चौरसिया प्रधानमंत्री बनाये गये जिसका उन्होंने संचालन किया तथा संगठनात्मक भूमिका अदा की। इस आंदोजन में आर्यसमाज के सभासदों में निमांकित व्यक्तियों ने जेल की यातनाये सहीं और स्वतंत्रता आंदोलन को सफल बनाने में सक्रिय योगदान प्रदान किया– श्री दीनदयाल चौरसिया, श्री मदन गोपाल चौरसिया,श्री भागीरथ जी चौरसिया, श्री गौरीशंकर जी आर्य, श्री बुलाकी राम कुठा, श्री हरगोविन्द जी महाशय, श्री फूलचन्द्र जी पाठक, श्री हरप्रसाद जी विद्यार्थी, श्री भगवान दास जी कुशवाहा , श्री भवानीदीन थोकदार, श्री भागीरथ शर्मा, श्री नाथूराम गुप्ता आदि के नाम प्रमुख हैं ।

आर्य वीर दल का गठन – पूज्य श्री दिव्यानंद जी सरस्वती की प्रेरणा से मऊरानीपुर में वर्ष 1945 में आर्यवीर दल का ऐतिहासिक शिविर लगाया गया जिसमें आर्यसमाज से नव युवकों को आर्य वीर दल का प्रशिक्षण लेने हेतु भेजा गया। प्रशिक्षण से लौटने के पश्चात आर्यवीर दल ने नगर में काफी प्रगति की। गनर में चार स्थानों पर शाखायें लगती थी जिनमें नगर के लगभग 500 आर्यवीर शाखाओं में 6 साल तक भाग लेते रहे और इनके द्वारा नगर में काफी जन जागरण हुआ जिनके नाम निम्न प्रकार है।–

श्री दीनदयाल जी चौररिया, श्रीमदन गोपाल जी वैध, श्री हरगोविन्द जी महाशय, श्री भागीरथ जी चौरसिया, श्री फूलचन्द्र जी पाठ, श्री बाबूराम चौरसिया, श्री रामकृष्ण जी चौरसियां, श्री पूरनलाल जी किसान, श्री भुमानीदीन कुर्मी, श्री पाण्डुरंग आदि।

पंजाब के हिन्दी आंदोलन में योगदान– सन 1957 में पंजाब में हिन्दी आंदोलन हुआ। चण्डीगढ के मुख्यमंत्री श्री प्रताप सिंह कैरव में पंजाब में हिन्दी का प्रयोग बंद करा दिया। उनकी इस कार्यवाही के विरूद्ध आर्य समाजियों ने सत्याग्रह किया जिसमें महाराजपुर के आर्यसमाजी श्री घासीराम चौरसिया व श्री कामता प्रसाद चौरसिया की प्रेरणा से सत्याग्रह में सम्मिलित होने हेतु श्री जागेश्वर कुशवाहा तथा श्री घासीराम बढई को भेजा गया। आंदोलन में इन दोनो को साढे तीन माह की जेल की सजा भोगनी पड़ी। अंततः आर्यसमाज का आंदोलन सफल हुआ और तब ये दोनो आर्यवीर महाराजपुर वापिस आयें। आर्यसमाज पंजाब की ओर से आर्यसमाज महाराजपुर क सदस्यों कों आंदोलन में सहयोग देने हेतु एक सम्मान पत्र भी दिया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज– आर्यसमाज की स्थानपना से दो वर्ष पूर्व पाठशाला प्रारम्भ की गई इसके पश्चात 1921 में नगर में कन्या पाठशाला प्रारम्भ की गई और वर्ष 1931 में बालकों की शिक्षा हेतु विद्यालय प्रारम्भ किया गया। वर्ष 1964 में तत्कालीन प्रधान एवं स्वतंत्रता संग्राम संनानी श्री दीनदयाल चौरसिया एवं नगर के गणमान्य नागरियकों के सहयोग से छत्रशाल म्यूनिसिपिल डिग्री कॉलेज का प्रारम्भ किया गया। श्री वैधराज जी नायक चेयरमैन नगर पालिका के द्वारा महाविद्यालय की स्थापना में विशेष सहयोग प्रदान किया गया। शासकीय महाराजा महाविद्यालय छतरपुर के तत्कालीन प्राचार्य डॉ. हरीराम जी मिश्र एवं नगर पालिका महाराजपुर के सी.एम.ओ श्री बी.डी. श्री वास्तव के प्रयास से 16 सितम्बर 1964 से सागर विश्वविद्यालय से सम्बंद्धता प्राप्ता हुई। छत्रसाल शिक्षा प्रसारिणी समिति द्वारा ग्राम टटम में 1982 में शासन को हस्तातरित कर दिया गया तत्पश्चात समिति द्वारा ग्राम टटम में 1984 में स्वामी प्रणवानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टटम का शुभारम्भ किया गया जो आज भी संचालित है। महाराजपुर नगर में 1979 में आर्यसमाज महाराजपुर ने महर्षि दयानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का प्रारम्भ किया गया। वर्ष 1994 में स्वामी प्रणवानंद महाविद्यालय डुमरा पूज्य स्वामी प्रणवानंद जी सरस्वती के सहयोग से प्रारम्भ किया गया। यह संस्थाये आज भी अच्छे प्रकार से संचालित है। वर्ष 2007–08 में महर्षि दयानंद शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना की गई जिसमें छात्रों का बी.एड, डी.एड. का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। नगर के शैक्षणिक विकास में आर्यसमाज की महती भूमिका है।

स्वास्थ्य क्षेत्र : आर्य समाज के द्वारा वर्ष 1954 से निरंतर नेत्र शिविरों के माध्यम से नेत्र रोगियों को चिकित्सा उपलब्ध कराई जा रही है। प्रथम वर्षों में उ.प्र. के अलीगढ़ शहर से डॉक्टर आकर नेत्र उपचार करते थे, बाद मं वर्ष 1980 में केन्द्र सरकार द्वारा जिला अंधत्व निवारण समिति का गठन किया गया, जिसके माध्यम से शिवरों को लगाया गया। वर्तमान में सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय चित्रकूट के सहयोग से नेत्र शिविर प्रत्येक वर्ष निरंतर आयोजित किये जाते हैं। इसके साथ ही समय–समय पर रोग निदान शिवरों का आयोजन किया जाता है।

वैदिक धर्म का प्रचार : आर्य समाज महाराजपुर के द्वारा बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अनेक स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापना की गई एवं वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न ग्रामों एवं नगरों में समय–समय पर वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया जाता है। आर्य समाज महाराजपुर के द्वारा आर्यसमाज छतरपुर, आर्यसमाज राजनगर, आर्यसमाज महोबा को उत्तरोत्तर विकास हेतु हर संभव सहयोग एवं सहायता प्रदान की जाती है। आर्य समाज महाराजपुर ने छतरपुर, राजनगर, महोबा, गढ़ीमलहरा, लवकुशनगर, सिजई, देवपुर इत्यादि स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापना में सहयोग किया व सतत सम्पर्क जारी है।

स्वागत वन्दन अभिनंदन

आर्यसमाज महाराजपुर जिला–छतरपुर (म.प्र)

Mob. 8435770208, 9425882552, 8120109248, 9755585458, 9826285402

स्वागत वन्दन अभिनंदन